प्रकाशक
देवेन्द्रसिंह गहलोत एम ए.
हिन्दी साहित्य मन्दिर
गणेश चौक, रातानाडा
जोधपुर

पचम संस्करण
अगस्त १९७७



मूल्य तीन रुपया



मुद्रक
चन्द्रलेखा गहलोत
साधना प्रेस
उच्च न्यायालय मार्ग
जोधपुर

मुख हीणा सिरदार, मत हीणा राखै मिनख।
अस आंधो असवार, राम रुखालो राजिया ॥८३॥

मूर्ख सरदार बुद्धिहीन मनुष्य को अपने पास रखते हैं तो वे ऐसे ही हैं जैसे अन्धा मनुष्य घोड़ा पर चढ़ा हुआ। हे राजिया! उनका ईश्वर ही [illegible] (रक्षक) है।

नावे नहँज भात, लागे विणज विरावणां।
रोवावे दिन रात, रोटचा बदले राजिया ॥८४॥

ऐसे पुरुष जिन्हें किसी समय भात नहीं भाता था और न मीठा भात ही अच्छा लगता था, हे राजिया! वे ही रोटियों के लिए रात दिन गिड़गिड़ाया करते हैं। समय किसी का एकसा नहीं रहता है।

फूड़ा निलज कपूत, हिया फूट ढांटा असल।
इसड़ा पूत अऊत, रांड जणे क्यूं राजिया ॥८५॥

फूहड़े निर्लज्ज, फूटे हिये के (मूर्ख) बिल्कुल ढोर के समान, कपूत और [illegible] पुत्र को हे राजिया! स्त्री प्रसव ही क्यों करे? अर्थात ऐसों का न होना ही अच्छा है।

[illegible]गे जठे चमन्त, अण चलिया आवै नहीं।
नेणा मे दरसन्त, नैस सुलोचन राजिया ॥८६॥

हे राजिया! [illegible] आता है [illegible] बिना [illegible] आने में [illegible] भी नहीं आता है।

[illegible]नां नंपट पाट, परना नह राखे पमर।
[illegible]नां एक निराट, राज तणां बल राजिया ॥८७॥

[illegible] मनुष्य [illegible] है, परन्तु हे राजिया! [illegible]

भूमिका

राजस्थान के सैकड़ों काव्यों में 'राजिया के सोरठे' भी अपना एक अच्छा स्थान रखते हैं। सोरठों की भाषा सरल, रोचक और उपदेशप्रद होने के कारण राजस्थान के निवासी प्रायः इन सोरठों को बोलते देखे जाते हैं। शायद ही कोई ऐसा मनुष्य हो जिसे राजिया के दो चार सोरठे याद न हों। राजाओं और सरदारों की सभा में राजिया के सोरठे मौके बे-मौके सुने जाते हैं। साधारण लोग तो इन्हें सांसारिक व्यवहार में नित्य प्रयोग करते रहते हैं। पश्चिमी राजस्थान की रियासतों के रेजिडेण्ट कर्नल पाउलेट तो इन सोरठों पर इतने मुग्ध थे कि उन्होंने बड़ी मेहनत से जितने भी सोरठे मिल सके उनका संग्रह कर अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया था। उक्त रेजिडेंट इन सोरठों की तारीफ में कहा करते थे—"मारवाड़ी भाषा के साहित्य में राजिया के सोरठे अमूल्य वस्तु हैं।"

राजिया सेवग जाति में उत्पन्न हुआ था। इसका जन्म वि० सं० १८८४ (ई० सन १८२७) के आस-पास मारवाड़ राज्य के कुचामण ठिकाने के भूकरी नामक गांव में हुआ था। यह भूकरी गांव मकराणा रेल्वे स्टेशन से पूर्व की ओर दो मील पर है। इसका नाम राजाराम बतलाया जाता है। लोग इस

"राजिया" नाम से पुकारा करते थे । अखिल भारतवर्षीय रावणा राजपूत महासभा अजमेर का मत है कि 'राजिया के सोरठे' राजारामजी चौहान के बनाये हुए है । वे कहते है कि बारहट कृपाराम के यहा राजिया नामक दरोगा (रावणा) नौकर था । परन्तु वास्तव मे ये सोरठे राजिया कृत नही है । शेखावाटी (जयपुर) के ढाणी नामक गाव के खिडिया चारण कृपाराम बारहठ नामक कवि ने इन सोरठो की रचना की थी ।[1] कृपाराम स० १८५२ वि० मे बहुत बीमार हुए तब राजिया ने उनकी सच्चे मन से सेवा की जिससे वयोवृद्ध कृपाराम बहुत ही प्रसन्न हुए । उन्होने अच्छे होने पर कहा कि—'इस सेवा के बदले मै तुम्हे अमर कर दू गा' । इसी कारण कृपाराम ने राजिया को सम्बोधन करते हुए सैकडो सोरठे बनाये । कहते

---

१ वास्तव मे ये सोरठे कृपाराम खडिया के है । कृपाराम के पिता का नाम जगाराम था । खराडी गाव मे रहने के कारण ये खडिया चारण कहलाने लगे । खराडी नागौर जिले के परबतसर परगने का एक गाव है । जगाराम कुचामण के ठाकुर जालिम सिंह के पास चले गये । ठाकुर ने इन्हे जूसरी गॉव दे दिया । कृपाराम का बाल्यकाल यही बीता । जालिमसिंह की मृत्यु के पश्चात कृपाराम सीकर के राव देवीसिंह के पास चले गये । देवीसिंह ने अपने अन्तिम समय मे अपने पुत्र लक्ष्मणसिंह की देखरेख के लिए कृपाराम को नियुक्त कर दिया ।

कृपाराम की अन्य रचनाओ मे चालक नसैनी, लक्ष्मण प्रकाश, फुटकर डिंगल गीत, चालकराम नाटक आदि मिलते ह । लक्ष्मण प्रकास अलकारो का ग्रन्थ है जिसमे रावराजा लक्ष्मणसिंह का यशवर्णन है । लक्ष्मणसिंह ने इनकी सेवाओ को देखकर इन्हे गाव लक्ष्मणपुरा तथा ढाणी (कृपाराम की ढाणी) पुरस्कार मे दिये थे ।

है कि कृपाराम ने लगभग ५०० सोरठे बनाए थे किन्तु अब लगभग १६० सोरठे ही मिलते हैं।"

यदि यह बात सत्य हो तो वास्तव मे कृपाराम ने राजिया के नाम को ससार मे अमर कर दिया और यदि 'रावणा राजपूत महासभा' का दावा सत्य हो तो भी यो कहा जा सकता है कि राजाराम ने अपना नाम स्वय साहित्याकाश मे एक चमकती हुई लेखनी से लिख दिया। सोरठो का भाव, उपदेश इत्यादि का आस्वादन तो काव्य मर्मज्ञ ही कर सकते है परन्तु भाषा इनकी इतनी सरल और सुगम है कि सर्वसाधारण भी इनसे बहुत आनन्द प्राप्त कर सकते है। राजिया के सोरठो के विषय मे जोधपुर नरेश महाराजा मानसिहजी (सं०१८६०-१९०० वि०)[२] ने जो कुछ कहा है वह अक्षरश सत्य है। इन्होने लिखा है—

सोने री साजाह, नग कण सू जडिया नकै।
कीनो कविराजाह, राजा सामम राजिया॥

अर्थात्। 'मोतियो से जडे हुए सोने के जेवरो की तरह हे राजिया! ये तेरे सोरठे है। इनके प्रताप से ही कवियो ने तुझे राजाओ तक प्रसिद्ध कर दिया है।' वास्तव मे राजिया के

---

१ ये सोरठे बहुत ही नीतिपूर्ण, सरल व मधुर राजस्थानी भाषा में लिखे गये हैं। इसी कारण ये सर्वत्र प्रसिद्ध हैं।

२ महाराजा मानसिंह साहित्य प्रेमी तथा साहित्यकारों के कद्रदान थे। इन्होंने कृपाराम को जोधपुर बुलाया था लेकिन वह वृद्धावस्था के कारण जोधपुर नहीं जा सके। बादमें महाराजा ने [illegible] भी कृ- [illegible] था।

सोरठो ने उसे राजा महाराजाओ तक ही नही बल्कि इससे भी कही ज्यादा प्रसिद्ध कर दिया है।

सोरठे राजाराम ने बनाये हो या कृपाराम ने, वे तो राजाराम (राजिया) की कीर्त्ति को अमर कर रहे है। कृपाराम के नाम को कम ही लोग जानते हैं। यह तो खोज करने वालो का काम है, सर्वसाधारण तो उसे राजिया का ही काव्य समझते हैं। सोरठो की भाषा डिंगल राजस्थानी मे है—किन्तु फिर भी सहज ही मे प्रत्येक व्यक्ति के समझ मे आने योग्य है।

राजिया के सोरठो की सख्या ५०० के लगभग है तथापि हमे बहुत प्रयत्न करने पर भी जितने प्राप्त हो सके आपकी सेवा मे उपस्थित करते है। ये सोरठे अमूल्य मणियो की तरह वयोवृद्ध पुरुषो के जिव्हाग्र पर बिखरे हुए है। इनमे से बहुत से सोरठो को सुनने का सौभाग्य मुझे मेरे पुज्य पिता श्री किशोरसिहजी के मुखारबिन्द से प्राप्त हुआ, जो आज ८३ वर्ष की अवस्था होने पर भी बडी रोचकता व स्मृति से बखानते है। आशा करता हूँ कि प्रेमी पाठक इन सोरठो के रसो एव भावो का आस्वादन कर मेरे इस प्रयत्न को सफल करेंगे।

इतिहास सशोधन विभाग
जोधपुर
१८ जुलाई सन् १९२७ ई०

जगदीशसिह गहलोत

आमुख

मेरे पिताजी (स्व.) श्री [illegible] [illegible] हनुमान-[illegible] के साथ राजस्थानी भाषा के प्रेमी थे। उन्होंने राजस्थानी भाषा के लोकगीतों, दोहों, कहावतों, गीतों आदि का संग्रह व सम्पादन किया था। उनका यह संग्रह यदि प्रकाशित किया जावे तो लगभग २००० पृष्ठों का ग्रंथ तैयार हो सकता है। लेकिन दुःख इस बात का है कि उनके जीवन काल में यह [illegible] जीवित [illegible] के साथ-साथ [illegible] प्रकाशित नहीं हो सके। '[illegible]' की लिपि[illegible] उन्होंने हिन्दी व राजस्थानी में सम्पादित की थी। [illegible], [illegible] आदि की भी [illegible] तैयार [illegible] थी लेकिन दुर्भाग्य से वह प्रकाशित नहीं हो सका। मैं उनको शीघ्र प्रकाशित करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

'राजस्थान की उन्नति [illegible] राजस्थानी भाषा के द्वारा [illegible] सकती है [illegible] हिन्दी के द्वारा नहीं हो सकती है।' ऐसे विचार उन्होंने आज से ४० वर्ष पूर्व सन् १९२४ में '[illegible]' में प्रकट किये थे। उन्होंने यह भी कहा था कि 'राजस्थानी भाषा का [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] राजस्थान [illegible] [illegible] का [illegible] और साहित्य [illegible] [illegible] होगा।'

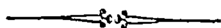
'राजिया के सोरठो' को राजस्थान के विद्वानो ने जैसा पूर्व सस्करणो को अपनाया हे आशा है, उसीकी रुचि के अनुसार इस सस्करण को भी अपनायेगे।

ऐसी योजना है कि राजिया के समान ही राजस्थानी के अन्य लोकप्रिय कवियो के रोहिला, चिमनिया, मानिया, मोतिया, भेरिया, चकरिया, भानिया आदि के नाम मे कहे सोरठे भी विद्वानो के समक्ष शीघ्र ही सुसम्पादित रूप मे प्रस्तुत करे। ये सोरठे कृपाराम के अनुकरण पर ही रचे गये थे।

इस परिवर्द्धित सस्करण के सम्पादन मे राजस्थानी के विद्वान श्री सौभाग्यसिह शेखावत से उल्लेखनीय सहयोग मिला है। अत श्री शेखावत के प्रति आभार प्रकट करना अपना कर्त्तव्य समझती हू।

मेडती दरवाजा, जोधपुर
स्वतत्रता दिवस, १९७७

पूर्णिमा गहलोत



राजिया के सोरठे

समझणहार सुजाण, नर औसर चूके नहीं।
औसर रो अवसाण[1], रहै घणा दिन राजिया ॥१॥

चतुर और समझदार मनुष्य अच्छे अवसर को हाथ से नहीं खोते, क्योंकि मौके पर किया हुआ अहसान, हे राजिया! बहुत दिनों तक बना रहता है।

जिणरो अनजल खाय, खल तिणरी खोटी करे।
जड़ा मूल सूँ जाय, राम न राखे राजिया ॥२॥

जिसका अन्न-जल खाकर जो कोई दुष्ट मनुष्य उसी का बुरा करता है। हे राजिया! ऐसे नमकहराम जड़ से मिट जाते हैं, उन्हें ईश्वर भी नहीं बचा सकता।

तज मन सारी घात, इकतारी राखे अथक।
वाँ मिनखाँ री बात, राम निभावे राजिया ॥३॥

जो कपट, छल, ईर्षा, द्वेष, काम, क्रोध आदि मनोविकार को छोड़ कर मेल मिलाप (एकता) धारण करते हैं, हे राजिया! उन मनुष्यों की बात परमात्मा अवश्य रखता है।

कुटिल निपट नाकार, नीच कपट छोड़े नहीं।
उत्तम करै उपकार, रूठा तूठा राजिया ॥४॥

कुटिल और निकृष्ट नितान्त मनुष्य कभी भी कपट नहीं छोड़ते, परन्तु हे राजिया! श्रेष्ठ आदमी नाराज होने पर भी सदा उपकार ही करते हैं।

१ — [illegible]

सुख मे प्रीत सवाय, दुख मे सुख टालो दिये।
जो की कहसी, जाय राम कचेड़ो राजिया ॥५॥

जिसने सुख मे तो अत्यन्त प्रेम दिखाया और दुख के समय मुह छिपाया, हे राजिया! ऐसे लोग ईश्वर के दरबार मे क्या जवाब देगे?

कीधोड़ा उपकार, नर कृतघरा जाणे नही।
लानत[1] त्यारी लार, रजी उडावो राजिया ॥६॥

कृतघ्नियो अर्थात उपकार न मानने वालो के साथ जो उपकार किये जाते है, उन्हे वे नही मानते। ऐसे लानतियो (धिक्कारने योग्य मनुष्यो) के पीछे, हे राजिया! धूल उडावो।

मुख ऊपर मीठास, घट माँही खोटा घडे।
इसडा सू इकळास[2], राखीजै नहि राजिया ॥७॥

जो मुह पर मीठी-मीठी बाते बनावे और मन मे उस प्रति बुरे भाव रखे, हे राजिया! ऐसे मनुष्यो से स्नेह नहीं रखना चाहिए।

एहला जाय उपाय, आछोडी करणी अहर।
दुष्ट किणी ही दाय, राजी हुवे न राजिया ॥८॥

दुष्टो के साथ किये उपाय (उपकार) और अच्छा व्यवहार भी व्यर्थ होता है, क्योकि हे राजिया! वे किसी भांति भी सतुष्ट नही किये जा सकते।

१—'लानत' शब्द अर्बी भाषा का है जिसका अर्थ है 'धिक्कार'।
२—यह अर्बी शब्द 'इखलास' का अपभ्रंश है।

उद्यम करो अनेक, अथवा अनउद्यम रहो।
होसी निहचै हेक, राम करे सो राजिया ॥९॥

कितने ही प्रयत्न करो अथवा न करो, हे राजिया! वही होगा जो परमात्मा करेगा।

पढ़वो वेद पुराण, सोरो इण संसार में।
बातां तणा बिनांण, रहस दुहेलो राजिया ॥१०॥

हे राजिया! वेद पुराणों का पढ़ना तो इस संसार में सुगम है, परन्तु बातों का रहस्य और रस जानना कठिन है।

गुण सूं तजै न गांस, नीच हुवे डर सूं नरम।
मैन लहै गर मांस, दाग पड़े जद राजिया ॥११॥

हे राजिया! नीच मनुष्य स्वभाव से ईर्ष्या नहीं छोड़ता, परन्तु डरने पर नरम हो जाता है जैसे गधे के मांस पर दाग दिया जाता है तभी वह मैन लेता है अर्थात पानी में मिल कर गल जाता है।

कुटल सहज समुदाय, गुण छोड़े अवगुण गहे।
जोंक चढ़ी कुच जाय, रातो पीवे राजिया ॥१२॥

कवि कहता है कि हे राजिया! दुष्टों का यह स्वभाव ही है कि वे गुणों को छोड़कर तथा अवगुणों का ग्रहण करते रहते हैं, जैसे जोंक स्तनों पर लग कर रक्त ही पीती है, दूध नहीं पीती है।

कोई नर बेकार, बड करता कहता बलै ।
राखै नही लगार, राम तणो डर राजिया ।।१३।।

हे राजिया ! इस ससार मे अनेक मनुष्य ऐसे हे जो व्यर्थ की अपनी वडाई और बढ वढ कर बोलते समय ईश्वर से भी नही डरते ।

चुगली ही सू चून[1], और न गुण इण वास्तै ।
खोस लियो वे खून[2], रिगल उठावे राजिया ।।१४।।

जिनमे कोई दूसरा गुण तो पाया नही जाता, इसलिए केवल चुगली से ही हे राजिया ! ऐसे लोगो ने निरपराध लोगो की रोटी मसखरी करके छीन ली है ।

आछो मान अमाव, मतहीणां केई मिनख ।
पुटिया[3] को ज्यूं पाव, राखै ऊँचा राजिया ।।१५।।

हे राजिया ! यदि ओछे मनुष्यो को कुछ इज्जत मिल जाये तो वे घमण्ड मे फूले नही समाते और पुटिया नामक पक्षी की तरह ऊ चा ही टाग रखते है ।

गुण अवगुण जिण गांव सुणे न कोई साभले ।
उण नगरी विच नॉव, रोही आछी राजिया ।।१६।।[4]

१—'चून' आटे को कहते है । सस्कृत शब्द 'चूर्ण' का अपभ्र श है ।

२—'खून' शब्द का अर्थ मारवाडी भाषा मे 'अपराध' है ।

३—'पुटिया' एक विशेष पक्षी का नाम है, वह ऊपर पंर करके वृक्ष पर सोता है ।

४ मिलाइये—

कर ले सू घी सराहिके सवै गह्यो मौन ।
अरे गधी अध नूतू, इतर दिखावत कौन ।

जिस गाँव में गुण और अवगुण को न तो कोई समझता हो और न सुनता ही हो, हे राजिया ! ऐसी अंधेर नगरी में कभी निवास मत करो। उसमें तो कष्ट पाना ही कहा जाता है।

हुवै न बूझण हार, जाणे कुण कीमत जठै ।
विण गाहक व्यौपार, रत्यो गिणीजे राजिया ॥१७॥¹

जहाँ कोई दाम पूछने वाला ही न हो वहाँ कदर भी कौन जाने, क्योंकि हे राजिया ! बिना ग्राहक के व्यापार अकारथ गिना जाता है।

मूरख टोल तमाम, घमकां राले अत घणी ।
गतराड़ो गुण ग्राम, राठोल्या मझ राजिया ॥१८॥

मूर्खों का दल बहुत ज्यादा गर्व माना करता है। हे राजिया ! नामर्दों में हिजड़ा ही सर्व गुण सम्पन्न गिना जाता है।

कारज सरे न कोय, बल प्राक्रम हिम्मत बिना ।
हलकारयाँ को होय, रंगा स्याल्यां राजिया ॥१९॥

हे राजिया ! कोई भी काम बल, पराक्रम और साहस के बिना नहीं हो सकता है। रंगे हुए गीदड़ों के ललकारने से क्या होता है ?

मिलै सिंह वन माय, किण म्रग म्रगापत कियो ।
जोरावर अति जाय, रहै उरधगत² राजिया ॥२०॥

सिंह को किन मृगों ने जाकर स्वामी अर्थात् मृगपति बनाया है कि हे राजिया ! जो बलवान होता है वह [illegible] ही ऊँचा बना रहता है।

---

१ [illegible], [illegible] व्यौपार ।
[illegible] ॥

२— [illegible] विरुद्धा [illegible] ।

खल धूकल कर खाय, हाथल बल मोताहलाँ।
जो नाहर मर जाय, रज त्रण भखे न राजिया ।।२१।।

कवि कहता है—भले ही सिंह भूखा मर जावे परन्तु वह मिट्टी या घास कदापि नही खायगा। हे राजिया! वह तो अपने पुरुषार्थ द्वारा पजो के बल से मुक्ताओ वाले हाथियो को मार कर खाता है।

नभचर बिहँग निरास, बिन हीमत लाखाँ वहै।
बाज छत्र कर वास, रजपूती सूँ राजिया ।।२२।।

पुरुषार्थ हीन लाखो ही पक्षी नित्य आकाश मे उडा करते है परन्तु बाज पक्षी तो हे राजिया! अपनी वीरता से ही तृप्त होकर जीवन व्यतीत करता है।

घेर सबल गजराज, केहर पल गजकाँ करै।
को सठ कर कस काज, रिगता हो रह राजिया ।।२३।।

सिंह मतवाले हाथी को घेर कर मार डालता है और उसके मास को खाता है। इसलिए हे राजिया! वे मूर्ख किस काम के है जो कुछ करते धरते नही और सिर्फ देखा ही करते है! अर्थात् ससार मे पुरुषार्थ ही प्रशसा के योग्य है।

आछा जुध अणपार, धार खगाँ सनमुख धसी।
भोगी सो भरतार, रया जिके नर राजिया ।।२४।।[1]

अनेक लडाइयो मे जो वीर तलवार पकड के लडे है उन्ही ने इस पृथ्वी को जीता है वे ही इस पृथ्वी के स्वामी है। हे राजिया! वे ही इस पृथ्वी पर टिक कर रहे है।

---

१ वसुधा वीरा री वधू, वीर तिका ही बीद

मान न होय उदास, मुतलब गुण-गाहक मिनख ।
ओखद रो कड़वास, रोगी गिणे न राजिया ॥२५॥

हे राजिया ! जो मनुष्यत्व और गुणों का ग्राहक होता है, वह अनादर से उदास नहीं होता। जैसे रोगी मनुष्य दवा के कड़वेपन पर ध्यान नहीं देता है।

गह भरियो गजराज, मद भरियो चालै मतै ।
कूकरिया बेकाज, रोय भुँसे किम राजिया ॥२६॥

हे राजिया ! मतवाला हाथी स्वेच्छा से मस्ती के साथ सड़कों पर घूमता फिरता है, परन्तु कुत्ते व्यर्थ ही उसके पीछे रो-रो कर भौंका करते हैं।

असली री औलाद, खून करयां न करे खता ।
वाहै वदब वाद, रोट कुजातां राजिया ॥२७॥

अच्छे कुल में पैदा हुए मनुष्य के साथ अगर कोई व्यक्ति बुरा व्यवहार भी करे तो भी वह बुरा नहीं मानता, परन्तु हे राजिया दोगला—कमजात व्यक्ति व्यर्थ ही दुश्मनियां करता रहता है।

उस ही सूं अवदात, कहणी सोच विचार कर ।
बे औसर री बात, कही लगै न राजिया ॥२८॥

कोई भी बात सदा सोच विचार कर ही कहनी चाहिए क्योंकि बेमौके की बात हे राजिया ! अच्छी नहीं लगती है।

बिन मुतलब बिन भेद, कोई पटक्या राम का ।
खोटी कहै निखेद रामत करता राजिया ॥२६॥

हे राजिया ! कई राम मारे (दइ मारे) दुष्ट मनुष्य, बिन मतलब हसी दिल्लगी मे लोगो की बुराई कर देते है ।

पल पल मे कर प्यार, पल पल मे पलटै परा ।
ऐ मुतलब रा यार, रहै न छाना राजिया ॥३०॥

पल पल मे तो प्रेम करे और पल पल मे आखे बदलते रहे, हे राजिया ! ये मतलब के दोस्त है, यह बात अत मे अच्छी तरह प्रकट हो जाती है ।

सार तथा अणसार, थेटू गल बँधियो थको ।
बडा सरमचो भार, राल्यां सरै न राजिया ॥३१॥

हे राजिया ! अच्छा और बुरा जो भार परम्परा से गले मे बधा हुआ है उसको वे बडे लोग लज्जा से निभाते है, दूर नही कर सकते है ।

पहली किया उपांव, दव दुसमण आमय दटै ।
प्रचड हुआ वस बाव, रोभा घाले राजिया ॥३२॥

कवि कहता है कि हे राजिया ! आग, बैरी और रोग का पहले ही से प्रबन्ध करने से दबते है । जब प्रचण्ड होकर वायु के वश मे हो जाते है तो फिर ये कष्ट ही देते है ।

एक जतन सत एह, कूकर कुगध कुमांणसा ।
छेड़ न लीजे छेह, रैवण दीजै राजिया ॥३३॥

यही एक उत्तम उपाय है कि कुत्ते, दुर्गन्ध और दुष्ट मनुष्यो को कदापि न छेडे, हे राजिया ! इन्हे दूर ही रखे ।

नरां नखत परवांण, ज्यां ऊगां संके जगत ।
भोजन तपै न भाण, रावण मरतां राजिया ॥३४॥

भाग्यशाली लोग जहां पैदा होते हैं वहां लोग उनसे डरने लगते ही हैं। जैसे हे राजिया ! रावण के मरते ही सूर्य ने उसका भोजन पकाना छोड़ दिया।

हिम्मत किम्मत होय, बिन हिम्मत किम्मत नहीं ।
करै न आदर कोय, रद कागद ज्यों राजिया ॥३५॥

साहस से ही मनुष्य का मूल्य जाना जाता है जिसमें साहस नहीं उसकी समाज में कुछ भी कदर नहीं होती है। हे राजिया ! उसका कोई आदर नहीं करता, वह रद्दी के समान है।

देणो नहीं कदाम, नहचै कर फुनफो नफो ।
गैल्यां रो इकलास, रोल मचावे राजिया ॥३६॥

जो कभी पूरा नफा और नुकसान नहीं देखता है राजिया ! उस मूर्ख का मेल मिलाप मिट्टी में मिला देता है।

फूला फूल प्रकास, धराहूंती मेलै इसी ।
उडती रहै अकास, रजी न लागै राजिया ॥३७॥

फूले हुए, फूल के पौधों के, कटोरों बाग जो ऐसी मिला देते हैं कि वह आसमान में उड़ती रहती है, हे राजिया उसे रज (धूल) भी नहीं लगती है।

उपजावै अनुराग, कोयल मन हरखत करै ।
कडवो लागै काग, रसना रा गुण राजिया ॥३८॥

कोयल की मीठी वाणी के प्रति प्रेम उत्पन्न होने से मन को हर्ष होता है किन्तु कौआ उसकी वाणी के कारण बुरा लगता है । हे राजिया ! यह केवल वाणी का कारण है ।

भली बुरी रो भीत, नह आणै मन मे निदख ।
निळजी सदा नचीत, रहे सयाणा राजिया ॥३९॥

अधम मनुष्य भले बुरे का डर अपने मन मे बिलकुल नही रखता । हे राजिया ! वह निर्लज्ज बन कर सदा निशक बने रहते है ।

ऐस[1] अमल[2] आराम, सुख उछाह भेला सयणा ।
होका बिना हगाम,[3] रँग[4] रो हुवै न राजिया ॥४०॥

ऐशो आराम, अफीम वगैरा का नशा-पता मित्र आदि के एकत्र होने का आनन्द उत्सव, हे राजिया ! एक हुक्के के बिना सब फीका हो जाता है ।

१—अर्बी के "ऐश" शब्द का रूपान्तर । २—अफीम ।

३—"हगाम" फार्सी शब्द का अपभ्रँश जिसका अर्थ है धूम धडक्का ।

४—"रग" फार्सी शब्द है, मारवाडी मे मजे के लिए और शाबासी के लिए प्रयोग होता है ।

कठण पड़े जद काम, हाम पकड़ गाढो रहे ।
तो अलबत हो ताम, राम भले हुवै राजिया ॥४१॥

कठिन समय आ पड़ने पर यदि धैर्य धारण करके दृढ़ बन जावे तो हे राजिया! निश्चय ही ईश्वर उसकी सहायता करता है।

मद विद्या धनमान, ओछा से उकलै अवस ।
आधणं रै उनमान, रहे के बिरळा राजिया ॥४२॥

मद, विद्या, धन और मान यदि ओछे पुरुषों को प्राप्त हों तो वे उफनने लगते हैं। इन्हें प्राप्त करके हे राजिया! बिरले ही यथास्थान रहते हैं।

पय मीठा कर पाक, जो इमरत सींचीजिये ।
उर कड़वाई आक, रंच न मूकै राजिया ॥४३॥

दूध में शक्कर डाल कर और उसे औटा कर, अथवा अमृत से भी यदि आक को सींचा जावे तो हे राजिया! वह अपना कड़वापन जरा भी नहीं छोड़ेगा।

तुरंत बिगाड़ै ताह, पयगुन स्वाद स्वरूप ने ।
मिलाई पय माह, रिगळ खटाई राजिया ॥४४

हे राजिया! खटाई, दूध के गुण, स्वरूप, आनन्द। [illegible] ।

सब देखै संसार, निपट करै गाहक निजर ।
जाणै जाणण हार, रतना पारख राजिया ॥४५॥

यो तो सब ससार ही देखता है परन्तु जो जिस वस्तु क ग्राहक हाता है वह उसे बहुत ध्यान से देखता है। रत्नो की परख हे राजिया ! जानने वाले ही जानते है।

गुणी सपत सुर गाय, कियौ किसब मूरख कनै ।
जाणै रूनो जाय, रणरोही में राजिया ॥४६॥

हे राजिया ! गवैये ने सातो स्वरो मे गाकर मूर्ख के सामने अपना गुण प्रकट किया तो मानो सूने जगल मे जाकर वह रोया।

साचौ मित सचेत, कह्यौ काम न करै किसो ।
हरि अरजन रै हेत, रथ कर हॉक्यो राजिया ॥४७॥

हे राजिया ! सच्चा और योग्य मित्र कहो क्या काम नही करता ? देखो श्रीकृष्ण ने अपने हाथो अपने मित्र अर्जुन का रथ हाँका था।

रोटी चरखो राम, अतरो मुतलब आपरो ।
की डोकरिया काम, राज कथा सूँ राजिया ॥४८॥

वृद्धो को रोटी, चरखा और राम (ईश्वर) से ही अपना मतलब रखना चाहिए। हे राजिया ! राज कथा (राजनैतिक बातो) से उन्हे क्या प्रयोजन ?

जिण मारग जो जात, भूंडो हो अथवा भलो ।
बिसनी मुं मों बात, रह्या न जावै राजिया ॥४९॥

व्यसनी मनुष्य जिस रास्ते जाता है, वह भला हो चाहे बुरा हे राजिया! वह उसे त्याग नहीं सकता—उसके बिना उससे रहा नहीं जाता।

अवनी रोग अनेक, ज्यांरो विध कीधो जतन ।
इण परकत री एक रची न ओखद राजिया ॥५०॥

संसार में अनेक प्रकार के रोग हैं और परमात्मा ने उनके निवारणार्थ उपाय भी रचे हैं परन्तु हे राजिया! आदत के लिए परमात्मा ने कोई दवा निर्माण नहीं की।

कारण कटक न कोथ, सगरा चाहीजे सुपह ।
लंक विकट गढ़ लोध, रीछां बांदर राजिया ॥५१॥

फौज का ज्यादा होना कोई मुख्य कारण नहीं है, वास्तव में सिपाही अच्छे होने चाहिए। हे राजिया! लंका जैसा बांका गढ़ रीछ और बन्दरों ने ले लिया था।

आवै नहीं इलोल, बोलण चालण री बिबिध ।
टीटोड्यांरी टोल, राजहंस री राजिया ॥५२॥

टीटोड़ियां लाख यत्न करें तो भी राजहंस के बोलने, चालने की सुन्दरता नहीं पातीं क्योंकि सच्चे गुण के [illegible] [illegible] [illegible] गुणों से नहीं आ सकते हैं।

दूध नीर मिल दोय, एक जिसी आकृत हुवे ।
करै न न्यारो कोय, राजहस बिन राजिया ।।५३।।

दूध और पानी मिलने पर दोनो समान रूप और समान गुण हो जाते है, उन्हे हे राजिया ! राजहस के बिना कोई भी अलग अलग नही कर सकता है ।

मिणधर विष अणमाव, मोटा नह धारै मगज ।
बिच्छू पूँछ बणाव, राखे सिर पर राजिया ।।५४।।

बडे आदमी घमण्ड नही करते, जैसे साँप मे बिच्छू मे अधिक और तेज जहर होने पर भी उसे कुछ परवाह नही, किन्तु हे राजिया ! अपनी पूँछ मे बहुत थोडा जहर होने पर भी बिच्छू उसे बडी सावधानी से अपने सिर पर उठाये चलता है ।

जग मे दीठो जोय, हेत कपट बिवहार रहे ।
काम न मोटौ कोय, रोटी मोटी राजिया ।।५५।।

हे राजिया ! हम बहुत अनुभव के पश्चात् इस परिणाम पर पहुचे है कि ससार मे कोई काम रोटी से बढ कर नही है ।

विविध बणाय बणाव, जुगत घणी रचियो जगत ।
कीधी बसत न काय, रुपया सिरखी राजिया ।।५६।।

हे राजिया ! बडी कारीगरी से इस जगत को ईश्वर ने बनाया है परन्तु उसमे रुपये जैसी कोई भी वस्तु नही बनाई अर्थात् पैसा सबसे बढ कर है ।

कहणी जाय निकाम, आछोटा आणी वचन ।
दाँमा लोभी दाँम, रंजै नू वातां राजिया ॥५७॥

हे राजिया! धन के लोभी के सामने अच्छी अच्छी उक्तियाँ पेश करके भी कहा हुआ व्यर्थ जाता है, क्योंकि वह बातों से प्रसन्न नहीं होता वह केवल धन से प्रसन्न होता है।

हुंनर करो हजार, सैणप चतुराई सहत ।
हेत कपट व्यवहार, रहै न छाना राजिया ॥५८॥

हजारों चालाकी, होशियारी और चतुराई के साथ छुपाने का प्रयत्न करो, परन्तु हे राजिया! प्रेम और कपट व्यवहार छिप नहीं सकता है।

लह पूजा गुण लार, नह आडम्बर सूं निपट ।
सिव वन्दे संसार, राख लगाया राजिया ॥५९॥

पूजा गुणों से होती है, ढोंग से नहीं। शिवजी अपने शरीर पर राख लगाये रहते हैं, तो भी हे राजिया! संसार उन्हें पूजता है। अर्थात् [illegible]।

सो मूरख संसार, कपट जिणाँ आगल करै।
हरि सह जाणणहार, रोम रोम री राजिया ॥६१॥

परमात्मा रोम रोम की प्रत्येक बाते जानता है परन्तु हे राजिया! इतने पर भी जो छल छिद्र करते है वे पक्के मूर्ख है

ओरूँ अकल उपाय, कर आछी भूँडी न कर।
जग सह चाल्यो जाय, रेला की ज्यूं राजिया ॥६२॥

अब भी सोच-विचार ले, हमेशा भला कर, कभी किस का बुरा न कर, क्योंकि हे राजिया! सारा ससार पानी रेले के समान बहा चला जा रहा है।

ओसर पाय अनेक, भावै कर भूँडी भली।
अन्त समै गत एक, राव रंक री राजिया ॥६३॥

समय-समय पर भलाई करो या बुराई करो अन्त समय त हे राजिया! धनी और कगाल की एक ही गति है।

लूँक्या करै न लोप, वन केहर भैला बसै।
करै न सबला कोप, रंका ऊपर राजिया ॥६४॥

जगल मे शेर भी और लोमडिया भी निवास करती है परन्तु सिह लोमडियो को नष्ट नही करते है। हे राजिया! ज बलवान होते है वे निर्बलो पर कोप नही करते है।

पहली हुवै न पाव, कोट मणां जिणनै करै।
सुरतर तणो सुभाव, रंक न जाणे राजिया ॥६५॥

जो निरा कंगाल हो और उसके पास कुछ भी न हो उसे भी धनाढ्य बना देते हैं, यह कल्पवृक्ष (अर्थात् दातार पुरुष) का स्वभाविक गुण है पर हे राजिया! इसे हर कोई नहीं जानता है।

पाल तणो परचार, कीधो आगम काम रो।
बरसंतां घणवार, रुके न पाणी राजिया ॥६६॥

पानी आने से पहले ही पाल बनाने का प्रबन्ध करना चाहिए क्योंकि हे राजिया! मेह बरसते समय पानी भर जाने पर उसे नहीं रोका जा सकता है।

काम न आवे कोय, धरम करम लिखियां कियां।

मानै कर निज मीच, पर संपत देखे प्रपत ।
निपट दुखी ह्वै नीच, रीसां बलबल राजिया ।।६९।।

हे राजिया ! नीच लोग पराई सम्पति देखकर अपने दिल मे अपनी मृत्यु के समान दुख पाते है क्योकि वे लोग गुस्से से जल जल कर रात दिन दुखी होते रहते है ।

खूद गधेड़ा खाय, पेला री बाडी पड़ै ।
आ अणजुगती प्राय, रड़के चित मे राजिया ।।७०।।

पराया माल गधो के हाथ पड जाय तो उसको खाते और बिगाडते भी है । यह अयुक्त बात हे राजिया ! चित्त मे खटकती है ।

नारी, दास, अनाथ, पण माथे चाढ्यां पछै ।
हिये ऊपरलो हाथ, राल्यो न जावै राजिया ।।७१।।

स्त्री और सेवक दोनो ही अनाथ से होते है किन्तु हे राजिया ! जब वे सिर पर चढ जाते है तो छाती के ऊपर का हाथ बन जाते है जो कठिनता से हट सकता है ।

हिये मूढ जो होय, की सगत ज्यारी करै ।
काला ऊपर कोय, रग न लागे राजिया ।।७२।।

हे राजिया ! जो निपट मूर्ख होते है उन पर सत्सग का कुछ भी प्रभाव नही होता है जैसे काले रग पर दूसरा कोई रग नही चढता है ।

हित कर जोड़ें हाथ, कांमण सूं अनवी किसो ।
नमे त्रिलोको नाथ, राधा आगल राजिया ।।७७।।

हे राजिया! ऐसा कौन है जो स्त्री के सामने नही झुकता। श्री त्रैलोक्यिनाथ कृष्ण चन्द्र भी राधा के सामने झुकते थे।

जिण बिन रयो न जाय, एक घड़ी अलगो हुवां ।
दोस करे विण दाय, रीस न कीजै राजिया ।।७८।।

जिसके अलग होने से एक घडी भी नही रहा जा सके, वह यदि व्यर्थ भी दोपारोपण करे तो हे राजिया! उस पर गुस्सा नही लाना चाहिए।

समर सियाळ सुभाव, गळियांरा गाहड करै ।
इसडा तो उमराव, रोटो म्हँगा राजिया ।।७९।।

जो युद्ध के समय तो गोदड को तरह भागे और गलियो मे अपनो शूरवीरता प्रकट करे। हे राजिया! ऐसे सरदार तो रोटियो के बदले भी महगे हे।

कही न माने काय, जुगती अण जुगती जगत ।
स्याणां नै सुख पाय, रहणा चुप हुय राजिया ।।८०।।

जब कोई उचित और अनुचित बात की ओर ध्यान भी न दे तो हे राजिया! बुद्धिमान मनुष्य को चुप होकर ही सुख प्राप्त करना उचित है।

पहली हुवै न पाव, कोड मणां जिणनै करै।
सुरतर तणो सुभाव, इक जाणै राजिया ॥६

जो निरा कंगाल हो और उसके पास कुछ भी न हो उसे भी धनवान बना देते हैं। यह कल्पवृक्ष (अर्थात् दातार पुरुष) स्वाभाविक गुण है पर हे राजिया! इसे हर कोई नहीं जानता।

पाल तणो परचार, कीधो आगम काम रो।
बरसंतां घणवार रुकै न पाणी राजिया ॥६६॥

पानी आने के पहिले ही पाल बनाने का प्रबंध करना चाहिए क्योंकि हे राजिया! मेह बरसने समय पानी भर जाने पर उसे रोका जा सकता है।

काम न आवे कोय, धरम करम लिखियाँ कियां।
वालो हींग घलोय, हका विलोले राजिया ॥६७॥

केवल लिखकर रख छोड़ने से, बिना करे धर्म कर्म कुछ भी काम नहीं आते हैं। हे राजिया! देखिये स्वाद तो हींग के सुगन्ध से होता है या हींग की पुड़िया बाँधने मात्र से स्वाद आ जाते हैं।

म्याऊ डोरा भार मेक, चारज में मेला बने।
इसको अंतरो हेक, रस की जाणै राजिया ॥६८॥

यद्यपि मेंढक, मोर, मछली और कीड़े जल के पास रहते हैं। परन्तु हे राजिया! जल के गुणों का स्वाद तो भ्रमर ही लेता है।

— —

मांने कर निज मीच, पर सपत देखे अपत ।
निपट दुखी ही नीच, रीसा बलबल राजिया ॥६९॥

हे राजिया ! नीच लोग पराई सम्पत्ति देखकर अपने दिल मे अपनी मृत्यु के समान दुख पाते है क्योकि वे लोग गुस्से से जल जल कर रात दिन दुखी होते रहते हैं ।

खूद गधेडा खाय, पैलां री बाड़ो पड़ै ।
आ अणजुगती आय, रडके चित मे राजिया ॥७०॥

पराया माल गधो के हाथ पड जाय तो उसको खाते और बिगाडते भी है । यह अयुक्त बात हे राजिया ! चित मे खटकती है ।

नारी, दास, अनाथ, पण माथे चाढ्या पछै ।
हिये ऊपरलो हाथ, राल्यो न जावै राजिया ॥७१॥

स्त्री और सेवक दोनो ही अनाथ से होते है किन्तु हे राजिया ! जब वे सिर पर चढ जाते है तो छाती के ऊपर का हाथ बन जाते है जो कठिनता से हट सकता है ।

हिये मूढ जो होय, की संगत ज्यारी करै ।
काला ऊपर कोय, रग न लागे राजिया ॥७२॥

हे राजिया ! जो निपट मूर्ख होते हे उन पर सत्सग का कुछ भी प्रभाव नही होता है जैसे कालै रग पर दूसरा कोई रग नही चढता है ।

मलिया गिरा मझार, हर को तरु चंदण हुवै ।
संगत लिये सुधार, रूखाई ने राजिया ॥७३॥

मलयागिरी पहाड का प्रत्येक वृक्ष चन्दन हो जाता है । हे राजिया ! सत्सग वृक्षो को भी सुधार देता है ।

पिंड कुलछ पहचांण, प्रीत हेत कीजै पछै।
जगत कहै सो जाण, रेजा पाहण राजिया ॥[illegible]

कुल और कुलक्षणों को पहिचानने के बाद ही किसी से व्यवहार करना चाहिये, हे राजिया ! संसार के [illegible] पत्थर की तरह जानो।

ऊँचे गिरवर आग, जलती सह देखे जगत।
पर जलती निज पाग, रती न दीसे राजिया ॥७५

हे राजिया ! संसार ऊँचे पहाड़ पर की जलती हुई आग को तो देखता है परन्तु अपने सिर की जलती हुई पगड़ी को यह जरा भी नहीं देखता है।

सीता-पति सब जाण, काई मन चिंता करो।
सह सीतला सलांण, रासभ दीनी राजिया ॥७६॥

राम सब बातों को जानता है, [illegible] तुम दिल में क्या [illegible] हो हे राजिया ! [illegible] होने के कारण ही उसने सीतला देवी को गधे की सवारी दी है।

हितकर जोड़े हाथ, कामण नूं अनदी किसो।
नमे त्रिलोकी नाथ, राधा आगल राजिया ॥७७॥

हे राजिया ! ऐसा कौन है जो [illegible] के सामने नहीं झुकता [illegible] त्रिलोकीनाथ [illegible] भी राधा के सामने झुकते थे।

जिण बिन रयो न जाय, एक घड़ी अलगो हुयां।
रोस करे बिन दाय, रीस न कीजै राजिया ॥७८॥

[illegible] हे राजिया ! [illegible] चाहिये।

समर सियाल सुभाव, गलियारा गाहिड करै ।
इसड़ा तो उमराय, रोटो मुहँगा राजिया ॥७९॥

जो युद्ध के समय तो गीदड की तरह भागे और गलियो मे अपनी शूरवीरता प्रकट करे हे राजिया ! ऐसे उमराव तो रोटियो मे भी मँहगे है ।

कही न मांनै काय, जुगती अणजुगती जगत ।
स्याणां नै सुख पाय, रहणॉ चुप हुय राजिया ॥८०॥

जब कोई उचित और अनुचित बात की ओर ध्यान भी न दे तो हे राजिया ! बुद्धिमान मनुष्य को चुप होकर ही सुख प्राप्त करना उचित है ।

पाटा पीड़ उपाव, तन लागा तरवारियां ।
बहै जीब रा घाव, रती न ओषध राजिया ॥८१॥

हे राजिया ! शरीर पर तलवारो के घावो को मल्हम पट्टी करके अच्छा किया जा सकता है, परन्तु वचनो द्वारा लगे घावो की ससार मे कोई दवा ही नही है ।

नहचै रहो निशंक, मत कीजे चल विचल मन ।
ऐ विधना रा अंक, राई घटे न राजिया ॥८२॥

हमेशा बिल्कुल निशक हो कर रहो । अपने मन को विचलित न होने दो, क्योकि हे राजिया ! जो अक ब्रह्मा ने लिख दिये है वे तो एक तिल भर घट-बढ नही सकते है ।

---

१ लोह तणी तरवार न लागै, जीभ तणी तरवार जिसी ।

प्रभुता मेरु प्रमाण, आप रहै रज कण इसां।
जिके पुरस धन जाण, भूमण्डल बिच राजिया ॥८८॥

जिसके पास महान प्रभुता होने पर भी अपने को बहुत ही छोटा समझे, ऐसे पुरुष का हे राजिया! इस पृथ्वी पर धन्य समझो।

लावा तीतर लार, हर कोई हाका करै।
सीहां तणी सिकार, रमणो मुश्कल राजिया ॥८९॥

लवा और तीतर नामक पक्षियों के पीछे तो हर कोई मनुष्य हल्ला मचा लेता है, किन्तु हे राजिया! सिंहों का शिकार करना कठिन काम है।

मतलब सूं मनवार, नौत जिमावै चूरमा।
विन मतलब मनवार, राब न पावै राजिया ॥९०॥

हे राजिया! मतलब हो तो लोग निहोरे करके न्यौता देकर मिष्ठान जिमाते है परन्तु बिना मतलब के कोई एक बार राब (छाछ मे घोला हुआ आटा) भी नही खिलाता है।

मूसा ने मजार, हित कर बैठा हेकठा।
सब जाणै संसार, रह नह रहसी राजिया ॥९१॥

चूहे और बिल्ली अत्यन्त प्रेम करके इकट्ठे होकर बैठे हो तो भी हे राजिया! सब संसार जानता है कि उनमे मेल नही रहेगा।

जिण तिण आगे जोय, दुख अपणो कहजै नही।
काढ न दै धन कोय, रोराया सूं राजिया ॥९२॥

हे राजिया! हर किसी के सामने अपना दुख रोने नही बैठ जाना चाहिए, क्योकि रोने से कोई धन निकाल कर नही दे देता है।

साम धरम घर सांच, चाकर जिके ही चालसी ।
ऊंनी ज्यानें आंच, रती न आवे राजिया ॥६३॥

कवि कहता है कि हे राजिया ! जो नौकर स्वामी-धर्म और सत्य को धारण करके चलेगा, उन को किसी तरह की आंच नहीं आवेगी ।

बंध बाध्या छुड़वाय, कारज मन चित्यां करै ।
कहो चीज है काय, रुपया सरसी राजिया ॥६४॥

हे राजिया ! यह बता कि इस जगत में रुपये के समान दूसरा कौनसी वस्तु है जिसके द्वारा कैदी बन्धन से मुक्त हो जाते हैं और अनेक मन इच्छित काम पूरे किये जा सकते हैं ।

चोर चुगल वाचाल, ज्यांरी मांनीजै नहीं ।
सपडावै घसकाल, रीती नाड्यां राजिया ॥६५॥

हे राजिया ! चोर, चुगलखोर और वाचाली मनुष्यों की बातों पर कदापि विश्वास नहीं करना चाहिए क्योंकि ये लोगों का सूखी तलाइयों में स्नान कराते हैं । अर्थात जहां कुछ न हो वहां भी कुछ बतलाने का प्रयत्न करते हैं ।

[illegible]ा ही नू जड़ियोह, मद गाटो कारि माटवा ।
[illegible]स गुन पड़ियोह, सोयां मिलै न राजिया ॥६६॥

[illegible] मनुष्यों में [illegible] प्रीति [illegible], परन्तु [illegible] से मनमुटाव हो [illegible] प्रेम [illegible] से [illegible] के [illegible] नहीं मिलता है ।

खल गुल अण कूताय, हेक भाव कर आदरै ।
ते नगरी हूँ ताय, रोही आछी राजिया ।।९७।।

हे राजिया ! जहा खल और गुड एक भाव मे विकता हो, (अर्थात जहा अच्छे और बुरे का कोई भेद नही है ।) उस बस्ती से तो ऊजड जगल ही अच्छा है ।

औगुण गारा और, दुखदायी सारी दुनी ।
चोदू चाकर चोर, रांधे छाती राजिया ।।९८।।

हे राजिया ! दुर्जन, कायर, चोर और निकम्मे नोकर (गुलाम) ससार की छाती जलाया करते है ।

राव रंक धन और, सूरवीर गुणवान सठ ।
जात तणो नह जोर, रीत तणो गुण राजिया ।।९९।।

धनी, कगाल, शूरवीर, गुणी और मूर्ख जाति के लिहाज से नही होते है बल्कि हे राजिया ! गुण और कर्मो के अनुसार होते है ।

वसुधा बळ व्योपाय, जोयो सह कर कर जुगत ।
जात सुभाव न जाय, रोवयां धोवयां राजिया ।।१००।।

हे राजिया ! ससार की सब युक्तिया व रके देख लिया कि किसी भी तरह रोकने से अथवा समझाने से भी जाति का स्वभाव नही जाता है ।

अरहट कूप तमाम, ऊमर लग न हुवै इती ।
जलहर एको जाम, रेले सब जग राजिया ।।१०१।।

हे राजिया ! रहँट और कुए उमर भर भी इतना पानी नहीं उलीचते जितना एक ही पहर मे बादल जगत मे पानी बहा देता है ।

जगत् करै जिमणार, स्वारथ रै ऊपर सको ।
पुनरो फल अणपार, रोटी नह दे राजिया ।।१०७।।

स्वार्थ के लिए ससार जाति भोज आदि ज्योनारे करता है, परन्तु हे राजिया ! पुण्य का उत्तम फल होने पर भी कोई किसी को रोटी का टुकडा तक भी नही देता है ।

धान नही ज्यां धूल, जीमण बखत जिमाडिये ।
मांहि अस नहि मूल, रजपूति रो राजिया ।।१०८।।

वह अन्न नही बल्कि धूल है जो उन लोगो के खिलाने मे खर्च किया गया, जिनमे, हे राजिया ! राजपूती का अश तक नही है ।

के जहुरी कविराज, नग माणस परखै नही ।
काच कृपण बेकाज, रुलिया सेवे राजिया ।।१०९।।

कई जौहरी और कवि जो जवाहरात और श्रेष्ठ मनुष्य को नही पहचान सकते है हे राजिया ! वे काच और कजूस मनुष्यो को ही अपना सर्वस्व समझते है ।

आछा हुवे उमराव, हिया फूट ठाकुर हुवे ।
जडिया लोह जडाव, रतन न फावे राजिया ।।११०।।

अमीर तो हो अच्छे और ठाकुर (स्वामी) हो हिये के फूटे तो हे राजिया ! वे लोहे मे जडे हुए रत्नो की तरह शोभा नही पाते है ।

खाग तणो बल खाय, सिर साटा रो सूरमा ।
ज्यांरो हक रह जाय, गम न माने राजिया ।।१११।।

जो शूरवीर योद्धा तलवार के बल से सिर के बदले भोजन प्राप्त करते है, हे राजिया ! यदि उनका हक्क मारा भी जाय तो इस बात का उन्हे कुछ भी रज नही होता है ।

समझू होय सरदार, राजी चित्त रया सूं रहै।
भूमि तणा भरतार, रीझै गुण सूं राजिया ॥११२॥

हे राजिया! यदि बुद्धिहीन सरदार हो तो राजा का चित्त कैसे प्रसन्न रह सकता है क्योंकि वह तो गुणों का ग्राहक होता है।

वचन नृपति अविवेक, सुण छोडै सैणा सिनख।
पपत हूवा तर एक, रहै न पंछी राजिया ॥११३॥

हे राजिया! विवेकहीन राजा की बातें सुनकर समझदार लोग उसे इसी प्रकार छोड़ देते हैं जैसे पतझड़ होने पर पक्षी उस वृक्ष को।

सारंगा संगति पाय, करवा चंचेड़ै केहरी।
हाथ कुसंगत हाय, दीन न आवै राजिया ॥११४॥

[illegible] की संगति में पड़कर सिंह भी भूखो हरिणों को सताने लगता है और [illegible] नहीं जाता है। हे राजिया! बुरी संगति ऐसी [illegible] है।

जाणे कर निज मीच, पर संपत देखे अपत।
संपत दुखी हुवै नीच, दोनूं वळ वळ राजिया ॥११५॥

[illegible] दूसरे की सम्पत्ति देखकर नीच पुरुष [illegible] समझता है और [illegible] बराबर दुखी [illegible] है।

[illegible] कुटी वो मीत नह, आगै सनमे निरख।
[illegible] सदा सचीत रहै सयाणा राजिया ॥११६॥

[illegible]

बरतै हेत सवाय, कर बधू राखै कनै।
जो सिर दीजै जाय, रीठ बजाड़ै, राजिया ।।११७।।

हे राजिया ! यदि किसी के साथ खूब प्रेम का व्यवहार किया जाय और उसे भाई बनाकर पास मे रखा जाय तो वह समय पडने पर, यद्यपि सिर देना पडे तो भी खूब तलवार चलाता है।

खाग तणौ बळ खाय, सिर साटे रो सूरमा।
ज्यॉरो हक रह जाय, राम निभावै राजिया ।।११८।।

हे राजिया ! शूरवीर योद्धा अपनी तलवार के बल पर तथा अपने सिर के बदले मे स्वामी का अन्न खाता है। ईश्वर ऐसे स्वामी भक्त को सदा निभाते है और उसका हक ससार मे बना रहता है।

कण मुगता धन कोस, भरियो पण प्रापत विना।
दीजै कासूं दोस, रयणायर नै राजिया ।।११९।।

हे राजिया ! समुद्र नाना प्रकार के रत्नो तथा मोतियो से भरा हुआ है, पर यदि साधनहीन उन्हे प्राप्त न कर सके तो समुद्र को दोष किस लिए दिया जाय।

कनवज दिली सकाज वै सावंत पखरैत वै।
रुळता दीठा राज, खताण्या वस राजिया ।।१२०।।[1]

हे राजिया ! कन्नोज-पति जयचद और दिल्लीश्वर पृथ्वीराज के पास सबल सामत और अस्त्र-शस्त्र सज्जित अपार सेना थी पर स्त्रियो के वशीभूत होने के कारण वे समाप्त हो गये। भोग विलास मे डूबे रहने से बडे बडे राज्य नष्ट हो गए।

---

१ मिलाइये—नहिं पति निवल पति, पति बालक पति नार।
सुर नरपुर की तो को कहे, सुरपुर होत बिगार ।।

जायो तूं जिण देस, जळ ऊंडा थोथा थळां ।
भँवर पणा रो भेस, रल्यो कठा सूं राजिया ॥१२

हे राजिया ! जिस देश में तू जन्मा है वहां पानी गहरा है और भूमि भी पोली है। इस पर भी तुझे यह भ्रमर के रसिकपने का गुण कहां से मिला ?

दे नासा रे दाट, (ले) घोगाळो लारे हुवै ।
जद रस आवै जाट, रागां वागां राजिया ॥१२२॥

हे राजिया ! जाट को आनन्द का अनुभव तभी होता है जब वह अपने बैलों की जोड़ी के नाकों में नाथ डालकर उनके पीछे चाबुक लेकर चले और दे तान रे गीतों पर चलने लगे।

नारो नहीं निधात चाहीजै सेवक चतुर ।
बातां ही में बात, रीझ खीझ में राजिया ॥१२३॥

जैसे नारी जाति होना दोहनों के विज्ञान करने वाली होती है। परन्तु हे राजिया ! इसमें मन के भावों को जानने के लिए रूठ कर प्रसन्न कर तथा भेद छिपाकर बातों ही बातों में सारा भेद लेने वाला चतुर मनुष्य चाहिए।

पळ पळ में करै प्यार, पळ पळ में पलटै परा ।
लानत है ज्यां लार, रती उड़ावो राजिया ॥१२४॥

हे राजिया ! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ऐसे [illegible] [illegible] चाहिए। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दिखलाते फिरते हैं। उनके पीछे से —

पळ पल मे कर प्यार, पळ पळ मे पळटै परा।
वै मुतलब रा यार, रहै न छाना राजिया ।।१२५।।

हे राजिया! जो एक क्षण मे तो प्यार करते है और दूसरे ही क्षण मे बदल जाते है, वे स्वार्थ के मित्र है। ऐसे मतलबी यारो से दूर रहना ही अच्छा है।

मन सूँ झगडै मोर, पैला सू झगड़ै पछै।
त्याँ रा घटै न तोर, राज-कचेडी राजिया ।।१२६।।

हे राजिया! जो पहले अपने मन से झगड लेते है और बाद मे दूसरे के साथ झगडा शुरू करते है, ऐसे सावधान व्यक्तियो का तेज राजदरबार (कोर्ट-कचहरी) मे भी कभी नही घटता है

रिगल तणौ दिन रात, थळ करताँ सायब थक्यो।
जाय पड्यो तज जात, राजसिरचां मुख राजिया ।।१२७

हे राजिया! धन कमाने के लिए गृहस्वामो अपनी मर्यादा को भुलाकर दिन रात सामान्य प्रकार के हँसी ठट्ठे करता करता थक गया तब जाकर वह कही राजश्री सम्पन्न व्यक्तियो की सेवा मे जा पाया।

लो घडता ज लुहार, मन सु भई दे-दे भणै।
सूमाँ रै उर सार, रहै घणा दिन राजिया ।।१२८।।

हे राजिया! लोहा घडते समय लुहार "दे-दे" की आवाज करते है। उनके मुख से "दे-दे" ध्वनि सुन कर कजूसो के हृदय मे बडी चोट लगती है जो बहुत समय तक उन्हे पीडा देती रहती है।

वांकापणो विसाळ, वस कीं सूं घण वेसजै।
बीज तणी ससि बाळ, रस पर वारां राजिया ॥१२९॥

हे राजिया! संसार में बांकापन ग्रहण कर रहना बड़ा कठिन और बड़ा काम है। द्वितीया का चन्द्रमा यद्यपि शिशु-चन्द्र होता है, पर उसकी वक्रता के आगे सभी नमन करते हैं।

जेन मतलब विन भेद, केइयक पटक्या राम का।
खोटी कहै निखेद, रामत करता राजिया ॥१३०॥

हे राजिया! कई कई राम के मारे दुष्ट लोग बिना किसी मतलब की जानकारी तथा बिना स्वार्थ ही दूसरों की बुराई करते रहते हैं। ऐसा करते हुए उन्हें तनिक भी खेद नहीं होता है। वे इसे केवल विनोद मात्र समझते हैं।

सीसळ खोडां वीस, दीनो नांही ग्रेक दिन।
कव्यां घाले तीस, सीस पजोड़े ...

होका पीवणहार, जासी नरका जीवता ।
पाछै पडसी मार, राम कचेडी राजिया ।।१३२।।

हे राजिया ! हुक्का पीने वाले नरक मे जायेगे और पीछे उन पर भगवान के दरबार मे मार पडेगी ।

हित चित प्रीत हॅगाम, महक बखेरै माढवा ।
करै विधाता काम, राडावाळो राजिया ।।१३३।।

हे राजिया ! विधाता भी कभी कभी तो राण्डो वाले काम करता है । वह चित्त के प्रेम और प्रीति के वैभव का अनधिकारी मनुष्यो मे बिखेरता है ।

आछोडा ढिग आय, यो आछा भैळा हुवै ।
ज्यूं सागर मे जाय, रळै नदी जळ राजिया ।।१३४।।

हे राजिया ! सज्जनो के पास सज्जन पुरुप । इस प्रकार आकर इकट्ठे हो जाते हैं जैसे कि समुद्र मे नदियो का जल ।

मिलियां अति मनवार, बीछडिया भाखै बुरी ।
लानत दे जॉ लार, रजी उडावो राजिया ।।१३५।।[1]

मिलने पर अत्यन्त शिष्टाचार एव प्रेम दिखाते है और बिछुडने पर बुराई करते है, हे राजिया ! ऐसे धिक्कारने योग्य पुरुपो के पीछे धूल फेको ।

---

१ हित करता होवै नही, आयाँ सू अनुकूल ।
तिण रै सिर पर डानिये, धोवा भर भर धूळ ।।

रोग अगन अरु राड़, जाण अल्प कीजे जतन।
वधिया पछे विगाड़, रोक्यां रहे न राजिया ॥१३६॥

हे राजिया ! बीमारी, आग और लड़ाई को तुच्छ समझ कर बेफिक्र नहीं रहना चाहिए बल्कि दबाने का यत्न करना चाहिए, क्योंकि इनके बढ़ जाने पर इन्हें रोकना कठिन है।

उणही ठाम अरोग, भांजण री मन में मणे
आ तो बात अजोग, राम न भावै राजिया ॥१३७॥

जिस बर्तन में खाकर के अपना निर्वाह करता हो और उसी को नष्ट करे, यह अच्छी बात नहीं है। हे राजिया ! यह बात ईश्वर को भी अच्छी नहीं लगती है।

देवोतां री खाट, बैठे आय बराबरी।
नाई किसब निराट, रच्छ्यापी नूं राजिया ॥१३८॥

हे राजिया ! इस रछपाली (नाई के दौलत करने की वस्तु विशेष) के प्रताप से नाई को यह सौभाग्य प्राप्त हो जाता है कि वह खाट पर उमरावों के बराबर बैठ जाता है।

गैलो गंडक गुलाम, बुचकारयां बाथां पड़ै।
कूट्या देवै काम, रोस न कीजै राजिया ॥१३९॥

पटियाळो, लाहौर, जीद, भरतपुर जोयले ।
जाटाँ ही मे जोर, रिजक प्रमाणे राजिया ।।१४०।।

पटिय'ला लाहौर, जीद और भरतपुर इन चारो राज्यो के स्वामी जाट है और वे बलवान भी गिने जाते हैं। हे राजिया ! राज्यो के प्राप्त होने से ही जाट सबल गिने जाने लगे है ।

अडबां खड़बां आथ, सुदतारां बिलसे सदा ।
सूमां चलै न साथ, राई जितरी राजिया ।।१४१।।

हे राजिया ! दानी मनुष्य अरब-खरब तक द्रव्य हो तो भी उसका उत्तम उपयोग करता है, परन्तु वही द्रव्य सूमो (कजूसो-मू जी) के हाथो मे हो तो वे उसको खर्च नही करते हैं । अन्त मे वह उनके साथ राई के बराबर भी नही जाता है ।

दातारा इक दाय, आथ नही जो आपरै ।
काढै ब्याज कराय, रीझ परी दै राजिया ।।१४२।।

हे राजिया ! दानी मनुष्यो के पास द्रन्य न होने पर भी उनका सदा यही आदत रहती है कि ब्याजू ले ले कर भी दान करते रहते हैं ।

खीच मुफत रो खाय, करडावण डोफर घणी ।
लपर घणो लपराय, (कोई) रॉड ऊचकसी राजिया ।।१४

हे राजिया ! जो दूसरो के घर पर मुफ्त का माल खाते फिरते हो, और इतने पर भी नखरा दिखाते हो, ऐसे वाचालो से सावधान रहना चाहिये । मौका पडने पर ऐसे हो लोग परस्त्रियो का अपहरण करते है ।

आँसर मांहि अकाज, सांमो बोल्यां सांपजै ।
करणो जे सिध काज, रीस न कीजै राजिया ॥१४४॥

कभी कभी मौके पर सामने बोलने से काम बिगड़ जाता है इसलिए हे राजिया ! यदि अपना काम सुधारना हो तो दूसरे के अनरूप वचनों को सुनकर भी उस वक्त क्रोध नहीं करना चाहिये ।

गोला घणा नजीक, रजपूतां आदर नहीं ।
ण ठाकर री ठाक, रण में पड़सी राजिया ॥१४५॥

जो सरदार गुलामों को अपने मुँह बहुत लगाते हैं वे राज- में समस्त आदर-सम्मान को खो बैठते हैं । हे राजिया ! उनको रणक्षेत्र में जाने का काम पड़ेगा तो उनको उसका भोगना पड़ेगा अर्थात् युद्ध में गुलाम (चाकर) पीठ दिखा

करै न संका कोय, गांव धणी संभड़ गिणे ।
रैत बराबर होय, रोळ दट्ट मे राजिया ॥१४७॥

जो लोग अराजकता फैलाने पर गाव के ठाकुर को कोई भी कुछ नही गिनते है, हे राजिया ! उस गाव के लोग उन से डरते है । वह ठाकुर साधारण प्रजा के समान हो जाता है ।

बरतै हेत सवाय, कर बंधू राखै कनै ।
जो सिर दीजे जाय, रीठ बजाड़ै राजिया ॥१४८॥

हे राजिया ! जो किसी को भाई के समान समझ कर अपने पास अत्यन्त प्रेम से रखे, वह मनुष्य समय आने पर निस्सन्देह अपना सिर युद्ध मे कटवाने को तैयार हो जाता है ।

सत राख्यो साबूत, सोनगरे जगदे करण ।
सारो वातां सूत, रैगी सत सूं राजिया ॥१४९॥

हे राजिया ! सत्य पर अटल रहने से सब कार्य सिद्ध हो गये है । सत्य पर रहने से वीरमदेव सोनगरा चौहान, जगदेव परमार और दानी करण ने अपना नाम अमर कर दिया ।

खग झड़ बाज्या खेत, जिण पर पग पाछा दियै ।
(वा री) रजपूती मे रेत, राळ नचीतौ राजिया ॥१५०॥

लडाई के मैदान मे जब तलवार चलाने का वक्त आवे उ समय जो राजपूत पीछे हटता है, हे राजिया ! उसके नाम प धूल डालो ।

रीझ्यां देवै न मौज, चूक्यां चट चेतो करै ।
जा ठाकर रो चोज, रत्ती न आवै राजिया ॥१५१॥

जो ठाकुर प्रसन्न होने पर कुछ इनाम नहीं देता परन्तु काम के बिगड़ जाने पर नाराज झट हो जाता है। हे राजिया! ऐसे व्यक्ति के लिए दिल में जरा भी स्थान नहीं रखना चाहिए।

जात सुभाव न जाय, रांघड़ रै खोटो हुवै ।
आरण वाज्या आय, रीठ बजाड़ै राजिया ॥१५२॥

हे राजिया! रांघड़-राजपूत का यह एक जाति स्वभाव है कि वह निर्बल हो तो भी युद्ध छिड़ते ही मैदान में अपना हाथ दिखाये बिना नहीं रहता है।

सत्रू सूं दिल साफ, सेणा सूं दोखी सदा ।
बेटा सारू बाप, राछ घस्यां क्यो राजिया ॥१५३॥

हे राजिया! जो शत्रुओं से प्रेम करे और मित्रों से द्वेष रखे, ऐसे बेटे को बाप का जन्म देना ही व्यर्थ है।

घोचो लागा घाव, घी गेहूं भावै घणा ।
कहूजा तो उमराव, रोट्यां मूहंगा राजिया ॥१५४॥

खाने के लिए तो जिन्हें घी और गेहूं चाहिये और करने के [illegible] ऐसे [illegible] (पोचा) [illegible]

माठोड़ा घट मांय, जे कोडां संपति जुड़ै ।
मौज देण मन मांय, रत्ती न आवै राजिया ॥१५५॥

[illegible]

ऊंच नीच अतराय, कीरत कीधी किरतबां ।
मिनख जमारे मांय, रहे भलाई राजिया ।।१५६।।

जिसने ऊँच नीच का विचार न करके यश प्राप्त किया है, हे राजिया ! ऐसे मनुष्यो की भलाई ही ससार मे रह जावेगी ।

काळी घणी कुरूप, कसतूरी काटॉ तुलै ।
सक्कर बड़ो सरूप, रोडा तूलै राजिया ।।१५७।।

हे राजिया ! कस्तूरी बहुत ही काली होती है, किन्तु तोलो माशो से काटे पर तुलती है और शक्कर अत्यन्त सफेद और खूतसूरत होने पर भी तराजू मे पत्थरो से तौली जाती है । अर्थात गुणो से कीमत होती है न कि रूप से ।

भिडियो धर भाराथ, गढा कर राखै गढॉ ।
ज्यूं काळो सिर जात, राक न छाई राजिया ।।१५८।।

हे राजिया ! अपने गढो-किलो को मजबूत करके युद्ध पृथ्वी के लिए भिडना चाहिए । देखो काले नाग के सिर प कोई जाता है तो वह गरीबी नही दिखलाता बल्कि फरण कर सामने हो जाता है ।

गोली गोरे गात, पर घर दीसे पदमणी ।
पत लज सागे पात, रती न कीजे राजिया ।।१५९।

सुन्दर रूपवती दासी दूसरे के घर मे पद्मिनी के समा दिखाई देती है । हे राजिया ! उसकी इज्जत नही लेनी चा[illegible]। अर्थात उसके सम्पर्क मे बिलकुल नही आना चाहिए ।